International Journal of Information Movement Vol.4 Issue VI (October 2019)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 4-5

ग्रन्थालय एवं सूचना नेटवर्क : एक अध्ययन

डा0 शिव कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
प्रताप बहादुर पीजी कलोज, प्रतापगढ, उ0प्र0, भारत

सारांश

ग्रन्थालय एवं सूचना नेटवर्किंग वह क्षेत्र है। जिसका सूचना सेवाओं, उनकी क्षमताओं तथा प्रभावशीलता पर सीधा प्रभाव पडता है। ग्रन्थालय नेटवर्कों की परिभाषांए सामान्यतः ग्रन्थालयासें या नेटवर्क के अन्तर्गत मिश्रित स्तरों के सहयोग को बल रे रहा है। ग्रन्थालयों एवे सूचना नेटवकिंग ग्रन्थालयों को एक नया मुकाम दे रहा है तथा अपनी सूचना सेवाओं का विस्तार करने हेतु एक मंच दे रहा है। जिसके फलस्वरूप आप अपनी सूचना सेवाओं को एक नये रूप में प्रस्तुत कर रहे है। इस प्रलेख में हम ग्रन्थालय एवं सूचना नेटवर्किंग के विषय में परिचर्चा करेंगे तथा उनकी सेवाओं और उनसे होने वाले लाभों के विषय में अध्ययन कर रहे है।

प्रस्तावना

पिछले कुछ दशकों में कम्प्यूटर नेटवर्कों तथा दूर संचार का महत्व अत्यधिक बढ रहा है। कम्प्यूअर अब तीव्र गति तथा विश्वसनीयता के साथ दूर स्थानों तक युक्तियों के साथ सूचना का आदान प्रदान कर रहे है। नेटवर्किंग न्यूनाधिक जटिल पद है और इसके लाभों के प्रति अंतदृष्टि पैदा करने के कारण इसे विविध परिप्रेक्ष्यों में देखा जा रहा है। नेटवर्किग का तकनीकी विकास सूचना की अपेक्षा डेटा के विनियमों में निहित है।

सूचना व्यवसायी का संबंध सूचना के संप्रेक्षण से है। यह सूचना प्रणालियों के लिए नेटवर्कों के प्रभावशाली उपयोगों के लिए एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र साबित हुआ है। विगत वर्षों में सूचना से संबंधित अने कार्य क्षेत्रों में नेटवर्किंग का प्रादुर्भाव महत्वपूर्ण साबित हो चुका है। नेटवर्क के विकास से प्राप्त अनेक उपयोगिताओं को समझने से पूर्व हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि नेटवर्क क्या है। नेटवर्क को परिभाषित करें तो 'जब कभी दो से अधिक इकाईयां (जैसे व्यक्ति, संस्था, कम्प्यूटर टर्मिनल) एक दूसरे से जुड रही है और कुछ विशेषताओं में सहभागिता करती है। तब एक नेटवर्क की स्थापना हो जाती है।दूसरे शब्दों में भावात्मक अर्थ में नेटवर्क का अर्थ लोगों के बीच अंतर व्यवहार की पद्धति है। सूचना सेवाओं को प्रभावित करने वाले तीन प्रमुख नेटवर्क है। संचार, नेटवर्क, कम्प्यूटर नेटवर्क तथा ग्रन्थालय एवं सूचना नेटवर्क।

पुस्तकालय एवं सूचना नेटवर्क–स्वान्क के अनुसार "भौगोलिक विषय अथवा किसी अन्य प्रकार के अधारों पर ग्रन्थालयों की सहकारी प्रणालियों की धारणा के ग्रन्थालय तथाा पुस्तकालय नेटवर्क कहते है।

काट्ज के मता नुसार जब दो या दो से अधिक ग्रन्थालय अपने संसाधनों की सहभागिता को स्थापित करने का निर्णय लेते है तो पारस्परिक अधिग्रहण के कार्यक्रम को विकसित कर सकते है और अपने स्थापित तथा अन्य वस्तुओं को एक साथ सहकारिता की स्थापना की जाती है।

ग्रन्थालय तथा सूचना नेटवर्क की आवश्यकता तथा महत्व–ग्रन्थालयों के बीच कम्प्यूटर तथा सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से स्थापित कर संसाधन, सहाभागिता, आरम्भ की जा सकती है।

वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी युग में ग्रन्थालय सेवाओं का उन्नत एवं प्रभावी बनाने हेतु सूचना तथा ज्ञान सामग्रियों के संग्रहण तथा पुनः प्राप्ति हेतु स्वचालिका का उपयोग ग्रंथालय तथा सूचना प्रसार के प्रत्येक क्रिया कलापों में आवश्यक होता जा रहा है। स्वचलन में कम्प्यूटर की भूमिका अधिक है। इसके माध्यम से ग्रन्थात्क नेटवर्क की योजना अत्यंत लोक

प्रिय होती जा रही है।जिसके द्वारा किसी भी ग्रंथालय की अध्ययन सामग्री का उपयोग देश के किसी भी कोने में बैठकर किया जा सकता है।

नेटवर्क एक ग्रन्थालय को दूसरे ग्रन्थालय से संयुक्त करता है जिससे संसाधन, सहभागिता एवं आवश्यक सूचनाओं का संप्रेषक किया जा सकता है। आज निम्न कारणों से ग्रन्थालय नेटवर्क आवश्यक है–

–प्रलेखों की संख्या में बढोत्तरी।

–वित्तीय संसाधनों में कमी।

–प्रलेखों में विविध प्रकार।

–ग्रन्थालय में संग्रह स्थान की कमी आना।

–ग्रन्थालय स्वरूप एवं सेवाओं में विविधता।

–उपयोक्ता की विविध आवश्यकता।

ग्रन्थालय एवं सूचना नेटवर्क का उद्देश्य–

ग्रन्थालय एवं सूचना नेटवर्क का उद्देश्य निम्नलिखित है–

Adinet (ahmedabad Library network.)

Calibnet (Banglore Library network.)

Delnet (Delhi Library network now)

Develogping Library network.

Punet (Pune Libreay network.)

निष्कर्ष–सभी विशलोषणों में हमने देखा कि ग्रन्थालय तथा सूचना नेटवर्क अत्यंत उपयोगी उपकरण है। ये ग्रन्थालयों तथा सूचना केन्द्रों को एक नयी दिशा देती है। जिससे ये उपयोगकर्ताओं को काम समय में उपयोगी सूचनाओं को सुविधाजनक तरीके से प्रदान कर सकते है। जो कि किसी भी ग्रन्थालय तथा सूचना केन्द्र का प्रमुख उद्देश्य होता है। ग्रन्थालय नेटवर्क के द्वारा संसाधन सहभागिता आधुनिक ग्रन्थालयों में विविध स्वरूपों में उपयोग किये जाते है। जिसे प्रौद्योगिकी के साथ मिलाने से उसे नेटवर्किंग स्वरूप प्रस्तुत करती है।

ग्रन्थालय जगत में मुख्यता संसाधनों की सहभागिता को उन्नत बनाने हेतु कई संगठनों द्वारा नेटवर्किंग की स्थापना की जा रही है। जैसे असीमित जनसंख्या में प्रकाश्ज्ञनों की उपलब्धता प्रलेखों के मूल्यों में लगातार होने वाली बढोत्तरी ग्रन्थालयोंं में स्थान की कमी उपयोगकर्ताओं की विविध प्रकार आवश्यकतांए प्रौद्योगिकी में होने वाले विकास एवं परम्परागत ग्रन्थालयों का परिवर्तित स्वरूप ग्रन्थालययों को संसाधन सहभागिता के लिए अग्रसर करता है। ग्रन्थालयों तथा सूचना नेटवर्क अपने क्रिया कलापों द्वारा अर्न्तराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर इस क्षेत्र में अपना योगदान कर रहा है।

सन्दर्भ–

1–सिंह ए0पी0 लाइब्रेरी विदाउट वाल दिल्ली, एस0एस0 प्रकाशन 2002

2–सिंह शकर कम्प्यूटर तथा सूचना तकनीकी दिल्ली, पूर्वांचल प्रकाशन 2000

3 **WWW.Wikipedia.S** तथा अन्स

4–सूचना विज्ञान दिल्ली एस0एस0 प्रकाशन

5–सिंह एम0पी0 यूज आफ इन्फार्मेशन सांइस, दिल्ली अभिजीत प्रकाशन 2004

6–सिंह आर पुस्तकालय तथा सूचनार्थ सेवाओं में इन्टरनेट ''विज्ञन, वर्ष 99 अंक 2 मई 2013 पेज 27–28